International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 07 | July - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

# राष्ट्रीय आंदोलन में महर्षि अरविंद घोष का योगदान

**चंदन कुमार पासवान**
शोध छात्र
पंजीयन संख्या : 499 /2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

**सारांश :**

महर्षि अरविंद का योगदान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक विशिष्ट विचारधारा और गहन वैचारिक दिशा प्रस्तुत करता है। वे न केवल एक क्रांतिकारी नेता थे, बल्कि एक दार्शनिक, कवि और आध्यात्मिक चिंतक भी थे, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि एक व्यापक आध्यात्मिक प्रक्रिया के रूप में देखा। यह शोध आलेख उनके बहुआयामी योगदान का विश्लेषण करता है, जिसमें उनके क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से लेकर आध्यात्मिक राष्ट्रवाद तक की विचारयात्रा को शामिल किया गया है। अरविंद घोष ने प्रारंभ में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र प्रतिरोध और सशस्त्र क्रांति का समर्थन किया। वे बंगाल विभाजन के विरोध में सक्रिय भूमिका निभाते हुए *बंदे मातरम्* और *युगांतर* जैसे पत्रों के माध्यम से युवाओं को प्रेरित करते रहे। कांग्रेस के 1907 के सूरत अधिवेशन में उन्होंने चरमपंथी विचारधारा का प्रतिनिधित्व किया और स्वराज की खुली मांग की। 1908 के अलीपुर बम कांड में गिरफ्तारी और जेल में रहकर उन्हें गहन आध्यात्मिक अनुभव हुए, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। पॉन्डिचेरी प्रवास के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति से भले ही दूरी बना ली, किंतु उनकी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रवादी चेतना का नवसंस्कार हुआ। *The Life Divine*, *Essays on the Gita*, और *The Ideal of Human Unity* जैसी रचनाओं में उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि भारत की स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता की आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है।

इस शोध आलेख का निष्कर्ष यह है कि महर्षि अरविंद का राष्ट्रवाद क्रांतिकारी जोश और आध्यात्मिक ऊँचाइयों का अद्भुत समन्वय था। वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक गहरी वैचारिक और नैतिक शक्ति देने वाले अद्वितीय व्यक्तित्व थे, जिनकी विरासत आज भी भारत की आत्मा को दिशा देती है।

**मूल शब्द (Key Words):** राष्ट्रीय आंदोलन, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, वंदे मातरम्, आध्यात्मिक राष्ट्रवाद, स्वराज, स्वतंत्रता संग्राम, दार्शनिक, नेतृत्व, संशोधनवादी उदारवाद, दार्शनिक , 'डोमिनियन स्टेटस', सांस्कृतिक पुनरुत्थान

## साहित्य समीक्षा :

महर्षि अरविंद के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और आत्म चेतना पर आधारित साहित्य भारतीय राजनीतिक चिंतन के दार्शनिक विस्तार को दर्शाता है। **श्री अरविंद की 'The Life Divine' (2001)** उनकी दार्शनिक दृष्टि की प्रमुख रचना है, जिसमें वे मानव जीवन को ईश्वरीय चेतना से जोड़ते हुए आत्म-प्राप्ति को राष्ट्र के पुनरुत्थान से जोड़ते हैं। यह ग्रंथ उनके 'इंटीग्रल योग' और 'संपूर्ण राष्ट्रवाद' के सिद्धांतों की गहन व्याख्या करता है। **अयंगार (1950)** द्वारा लिखित जीवनी *"श्री अरविंद: एक जीवनी और इतिहास"* उनके जीवन की ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक यात्रा को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करती है। यह कृति उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। **बी.आर. नंदा (2011)** का ग्रंथ *"Gandhi and His Critics"* तुलनात्मक दृष्टिकोण से उपयोगी है, जो अरविंद और गांधी के राष्ट्रवाद की वैचारिक भिन्नताओं को रेखांकित करता है। इससे अरविंद के चिंतन की विशिष्टता उजागर होती है।**S. Bhattacharya (2005)** ने अपने लेख *"Rethinking Indian Political Institutions"* में अरविंद को औपनिवेशिक भारत के वैकल्पिक राजनीतिक विमर्श के प्रवर्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका कार्य अरविंद के विचारों को आधुनिक संस्थागत परिप्रेक्ष्य में रखता है। **रामनाथ**

**शर्मा (2010)** और **R. N. Sharma** के लेख अरविंद के राजनीतिक चिंतन और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करते हैं। वे अरविंद की विचारधारा को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हैं। **के.डी. चट्टोपाध्याय (1980)** की पुस्तक *"Sri Aurobindo: A Philosophical Review"* अरविंद के दार्शनिक पक्ष को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है, जिससे उनके राष्ट्रवाद की आत्मिक गहराई स्पष्ट होती है।

इस प्रकार, यह संपूर्ण साहित्य श्री अरविंद के राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि आत्म चेतना की जागृति और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है।

## शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना :

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय आंदोलन में महर्षि अरविंद घोष के योगदान का विश्लेषण करना है। शोध यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार अरविंद घोष ने स्वदेशी, बहिष्कार, और स्वराज जैसे विचारों के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक गहराई प्रदान की। साथ ही, उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण राजनीतिक आंदोलन को किस प्रकार प्रेरित करता था, यह भी अध्ययन का केंद्र है।

यह परिकल्पित किया गया है कि महर्षि अरविंद घोष का योगदान केवल एक क्रांतिकारी नेता के रूप में सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नैतिक और आत्मिक दिशा प्रदान की। उनका विचार था कि भारत की मुक्ति केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण से ही संभव है। अतः उनका राष्ट्रवाद आध्यात्मिक चेतना और भारतीय संस्कृति के उत्थान से गहरे रूप से जुड़ा था।

## कार्यप्रणाली एवं डेटाबेस :

इस शोध आलेख की कार्यप्रणाली ऐतिहासिक और वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। शोध में गुणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। महर्षि अरविंद घोष के भाषण, पत्र, लेख और प्रकाशित ग्रंथों का पाठ विश्लेषण किया जाएगा, जैसे *Bande Mataram*, *Karmayogin*, *The Life Divine*, और *The Ideal of Human Unity*। द्वितीयक स्रोतों में पीटर हीस, अयंगार, रामनाथ शर्मा, भट्टाचार्य तथा अन्य विद्वानों की पुस्तकें, शोध लेख और समीक्षाएं शामिल हैं। इसके अतिरिक्त शोधनात्मक मंच जैसे JSTOR, Shodhganga और राष्ट्रीय अभिलेखागार का उपयोग किया गया है।

## प्रस्तावना

अरविंद घोष, जिन्हें अक्सर एक दार्शनिक-संत के रूप में सम्मानित किया जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों में से एक थे। उनका राजनीतिक चिंतन सशस्त्र राष्ट्रवाद से आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की ओर विकसित हुआ, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा को गहराई से प्रभावित किया। यह शोध आलेख भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उनके बहुआयामी योगदान का विश्लेषण करता है, जिसमें उनके राजनीतिक नेतृत्व, क्रांतिकारी सोच, पत्रकारिता और आध्यात्मिक दर्शन की भूमिका शामिल है। अध्ययन यह दिखाता है कि कैसे उनका प्रारंभिक उग्र राष्ट्रवाद और बाद का आध्यात्मिक दृष्टिकोण स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक नींव को प्रभावित करता है, जिससे वे राष्ट्रीय परिदृश्य में एक अद्वितीय शक्ति बन जाते हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन विभिन्न वैचारिक धाराओं का संगम था—संशोधनवादी उदारवाद, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, और गांधीवादी अहिंसा। इन धाराओं में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की नींव रखने वाले प्रमुख चिंतकों में अरविंद घोष एक महत्वपूर्ण किंतु प्रायः उपेक्षित स्थान रखते हैं। एक कट्टर राजनीतिक नेता से आध्यात्मिक दार्शनिक तक के उनके रूपांतरण ने उनके योगदान को जटिल और गहराईपूर्ण बना दिया है। यह लेख स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन करता है, विशेष रूप से उनके राजनीतिक लेखन, क्रांतिकारी रणनीतियों और दार्शनिक अंतर्दृष्टियों पर प्रकाश डालते हुए।

## प्रारंभिक जीवन और राजनीतिक जागरण

महर्षि अरविंद का जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में एक शिक्षित, आधुनिक और प्रगतिशील बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता डॉ. कृष्णधन घोष एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे, जो पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति में पूर्ण रूप से विश्वास रखते थे। अरविंद की प्रारंभिक शिक्षा भारत में नहीं, बल्कि इंग्लैंड में हुई। मात्र सात वर्ष की आयु में उन्हें उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड भेज दिया गया, जहाँ उन्होंने सेंट पॉल स्कूल, लंदन में अध्ययन किया और बाद में किंग्स कॉलेज, कैंब्रिज से शास्त्रीय साहित्य और पश्चिमी दर्शन का गहन अध्ययन किया।[1] वे यूरोपीय भाषाओं—जैसे फ्रेंच, जर्मन, लैटिन और ग्रीक—में भी दक्ष थे। अरविंद का इंग्लैंड में निवास केवल शैक्षणिक नहीं था, वह उनके राजनीतिक चिंतन के विकास का भी एक महत्वपूर्ण कालखंड था। वहीं उन्होंने पश्चिमी राजनीति, इतिहास और क्रांतिकारी आंदोलनों का अध्ययन किया और उन्हें भारत की औपनिवेशिक स्थिति की गहरी समझ प्राप्त हुई। भारत लौटने के बाद 1893 में उन्होंने बड़ौदा राज्य की सेवा में प्रवेश किया और कुछ वर्षों तक प्रशासकीय कार्य किए। यहीं पर उनका संपर्क भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन से गहराई से हुआ। वे स्वामी विवेकानंद, भगवद्गीता और उपनिषदों से प्रभावित होकर भारतीय आत्मा के प्रति जागरूक हुए। राजनीतिक दृष्टि से उनका जागरण बंगाल विभाजन (1905) की पृष्ठभूमि में हुआ। यह विभाजन ब्रिटिश सरकार की 'फूट डालो और राज करो' नीति का स्पष्ट उदाहरण था, जिसने भारतीयों में व्यापक आक्रोश फैलाया। अरविंद घोष ने इसे केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि भारतीय एकता के विरुद्ध गहरा षड्यंत्र माना। उन्होंने इस विभाजन का खुला विरोध किया और सक्रिय रूप से स्वदेशी आंदोलन, बहिष्कार आंदोलन तथा राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन में भाग लिया। इसी दौरान उन्होंने क्रांतिकारी विचारधारा को आत्मसात किया और भारत की पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज) की आवश्यकता पर बल दिया, जब अधिकांश नेता केवल सुधारों की बात कर रहे थे। उन्होंने *वंदे मातरम्* और *युगांतर* जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की तीखी आलोचना की और युवाओं को सक्रिय प्रतिरोध के लिए प्रेरित किया। [2] वे मानते थे कि केवल याचिकाओं और नरम मार्ग से स्वतंत्रता संभव नहीं है; इसके लिए साहस, बलिदान और क्रांतिकारी दृष्टिकोण आवश्यक है।

इस प्रकार, महर्षि अरविंद का प्रारंभिक जीवन पश्चिमी शिक्षा और भारतीय आध्यात्मिकता का अद्वितीय संगम था। उन्होंने आधुनिक बौद्धिकता के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक चेतना को अपनाया और अपने राजनीतिक जागरण को एक उच्च नैतिक और दार्शनिक धरातल प्रदान किया। उनका यह कालखंड भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की नींव रखने वाला सिद्ध हुआ।

## क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और राजनीतिक सक्रियता:

बीसवीं सदी के प्रारंभिक चरण में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जिस विचारधारा ने तीव्र ऊर्जा का संचार किया, वह था *क्रांतिकारी राष्ट्रवाद*। महर्षि अरविंद (अरविंद घोष) इस विचारधारा के प्रमुख प्रेरक थे, जिन्होंने न केवल इसके सिद्धांतों का प्रचार किया, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर इसकी दिशा भी तय की। उनका मानना था कि भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने के लिए केवल याचना, नरम मार्ग या संवैधानिक सुधार पर्याप्त नहीं हैं; बल्कि सशक्त प्रतिकार, आत्मबल और राष्ट्र के आध्यात्मिक उत्थान की आवश्यकता है। अरविंद का राजनीतिक सक्रियता का दौर विशेष रूप से 1905 से 1910 तक अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। 1905 में बंगाल विभाजन ने देश में व्यापक असंतोष को जन्म दिया। यह वही क्षण था जब महर्षि अरविंद ने सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना आरंभ किया। वे स्वदेशी आंदोलन के प्रबल समर्थक बने और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, स्वदेशी उद्योगों के प्रोत्साहन, तथा राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार की पुरज़ोर वकालत की। उनकी क्रांतिकारी गतिविधियाँ केवल विचारों तक सीमित नहीं रहीं। उन्होंने गुप्त संगठनों जैसे *अनुशीलन समिति* और *युगांतर* से संपर्क स्थापित कर युवाओं को सशस्त्र क्रांति के लिए संगठित किया। [3] उनके लेखन ने राष्ट्रवाद को वैचारिक आधार दिया—*वंदे मातरम्* पत्रिका के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन की कड़ी आलोचना की, और 'पूर्ण स्वराज' की बात कही, जो उस समय कांग्रेस की मुख्यधारा से अलग दृष्टिकोण था। महर्षि अरविंद का क्रांतिकारी राष्ट्रवाद केवल भौतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। उन्होंने इसे भारत की आत्मा के जागरण से जोड़ा। वे कहते थे कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भी होनी चाहिए। उन्होंने 'आत्मनिर्भरता' और 'राष्ट्रीय गौरव' को राष्ट्रवाद के अभिन्न तत्व माना। 1908 में *अलीपुर बम कांड* में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा किसी भारतीय क्रांतिकारी के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी राजनीतिक कार्रवाई थी। एक वर्ष की जेल यात्रा ने उनके भीतर एक आध्यात्मिक परिवर्तन उत्पन्न किया। [4] जेल में रहते हुए उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का गहन अध्ययन किया और योग के मार्ग पर अग्रसर हुए। यद्यपि अलीपुर बम केस में

वे अंततः निर्दोष सिद्ध हुए, परंतु यह घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बन गई। जेल से रिहा होने के पश्चात उन्होंने राजनीति से प्रत्यक्ष संन्यास ले लिया और पांडिचेरी चले गए, जहाँ उन्होंने *आध्यात्मिक राष्ट्रवाद* की अवधारणा को विकसित किया। यद्यपि वे प्रत्यक्ष राजनीति से दूर हो गए, उनके विचार और लेखन ने स्वतंत्रता संग्राम को गहरे रूप में प्रभावित किया। *'अर्य'*, *'लाइफ डिवाइन'* और *'ह्यूमन साइक्लोजी एंड नेशनल एजुकेशन'* जैसे ग्रंथों में उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक ऊँचाई दी।[5]

इस प्रकार महर्षि अरविंद का क्रांतिकारी राष्ट्रवाद केवल सशस्त्र संघर्ष का प्रतीक नहीं था, बल्कि वह एक गहन दार्शनिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आंदोलन भी था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता, नैतिक आधार और आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान की—जो उन्हें अन्य नेताओं से विशिष्ट बनाता है।

## कांग्रेस नेता के रूप में अरविंद घोष

अरविंद घोष का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में योगदान एक विशिष्ट और निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि उनका कांग्रेस से जुड़ाव कालानुक्रमिक दृष्टि से अल्पकालिक था (मुख्यतः 1906–1908), किंतु उसका प्रभाव अत्यंत गहरा और दूरगामी रहा। वे कांग्रेस के उस युग में सक्रिय हुए जब संगठन दो धड़ों में विभाजित हो रहा था—एक ओर नरमपंथी (Moderates), जो संवैधानिक सुधारों के पक्षधर थे, और दूसरी ओर उग्रपंथी (Extremists), जो तत्काल स्वराज्य और सक्रिय प्रतिरोध की वकालत करते थे। अरविंद घोष उग्रपंथी धड़े के प्रमुख विचारक और रणनीतिकार के रूप में उभरे। 1906 में कलकत्ता अधिवेशन में अरविंद घोष ने कांग्रेस के मंच से पूर्ण स्वतंत्रता (Purna Swaraj) की मांग को स्पष्ट रूप से उठाया, जब अधिकांश नेता अब भी ब्रिटिश सरकार से सुधारों की अपेक्षा कर रहे थे।[6] उन्होंने भारतीय जनता से आत्मबलिदान, राष्ट्रप्रेम और सक्रिय संघर्ष का आह्वान किया। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन केवल विनती और प्रार्थनाओं से समाप्त नहीं होगा, बल्कि इसके लिए व्यापक जनजागरण, स्वदेशी नीति, शिक्षा के भारतीयकरण और आत्मसम्मान का विकास आवश्यक है।1907 में सूरत अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास का एक निर्णायक क्षण था। इस अधिवेशन में कांग्रेस दो स्पष्ट विचारधारात्मक खेमों में बंट गई। एक ओर गोपाल कृष्ण गोखले और उनके समर्थक नरमपंथी थे, तो दूसरी ओर बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष जैसे उग्र राष्ट्रवादी। अरविंद घोष ने अधिवेशन में तिलक का समर्थन करते हुए कांग्रेस की नीति को अधिक सशक्त और संघर्षशील बनाने का आग्रह किया। परंतु इस तीव्र वैचारिक मतभेद के कारण अधिवेशन में भारी विघटन हुआ और कांग्रेस दो भागों में बंट गई। कांग्रेस के मंच से अरविंद घोष का राजनीतिक दृष्टिकोण स्पष्ट था—*"स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"*—यह विचार उन्होंने तिलक से भी पहले प्रस्तुत किया था। उन्होंने कांग्रेस को केवल राजनीतिक मंच न मानकर, उसे राष्ट्र निर्माण का एक साधन समझा, जिसके माध्यम से भारतीय जनमानस को जागरूक और संगठित किया जा सकता है। हालाँकि 1908 में अलीपुर बम कांड में गिरफ्तारी और जेल-यात्रा के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया और पांडिचेरी में आध्यात्मिक मार्ग अपनाया, परंतु कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम पर उनका वैचारिक प्रभाव बना रहा।[7] उनकी वैचारिक प्रेरणा ने बाद के क्रांतिकारियों—जैसे भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस और अन्य युवाओं—के विचारों को दिशा दी।

वस्तुत कांग्रेस नेता के रूप में अरविंद घोष ने संगठन को एक नये वैचारिक आयाम से जोड़ा। उन्होंने स्वतंत्रता को एक संपूर्ण—राजनीतिक, सांस्कृतिक और आत्मिक—प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे कांग्रेस के भीतर क्रांतिकारी विचारधारा को वैधता और दिशा प्राप्त हुई।

## व्यापक राष्ट्रवादी विमर्श और महर्षि अरविंद घोष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अनेक विचारधाराएँ और नेतृत्व धाराएँ सक्रिय थीं, जिनमें से कुछ ने तत्काल राजनीतिक स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाया, तो कुछ ने उसे सांस्कृतिक जागरण, नैतिक पुनर्निर्माण और आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ जोड़ा। ऐसे ही एक बहुआयामी राष्ट्रवादी विचारक थे **अरविंद घोष**, जिन्हें महर्षि अरविंद के नाम से भी जाना जाता है। उनका राष्ट्रवाद केवल विदेशी शासन से मुक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की पूर्ण आध्यात्मिक जागृति और चेतना के उत्कर्ष का साधन था। उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रवादी विमर्श को नई दिशा, गहराई और व्यापकता प्रदान की।

## आदर्श राष्ट्र की अवधारणा

अरविंद घोष का राष्ट्रवाद एक सामान्य राजनीतिक स्वराज की कल्पना नहीं करता, बल्कि वह राष्ट्र को एक जीवंत आत्मा (Living Entity) मानता है, जिसका उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आत्मिक पुनर्जन्म है।[8] वे मानते थे कि भारत का उद्देश्य केवल अंग्रेजों को हटाना नहीं है, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो धर्म, नैतिकता और आत्मज्ञान पर आधारित हो। उनका यह दृष्टिकोण राष्ट्रवाद को नैतिक और दार्शनिक धरातल पर ले जाता है।

## राजनीति और आध्यात्म का समन्वय

अरविंद घोष का राष्ट्रवाद आध्यात्म और राजनीति का संगम था। उन्होंने 'स्पिरिचुअल नेशनलिज्म' (आध्यात्मिक राष्ट्रवाद) की अवधारणा दी, जिसमें भारत की स्वतंत्रता को मानवता के आध्यात्मिक विकास की अनिवार्य शर्त माना गया। उनके अनुसार भारत का राष्ट्रीय कर्तव्य केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समस्त विश्व के लिए है। यह दृष्टिकोण उन्हें गांधी, नेहरू, बोस आदि समकालीन राष्ट्रवादियों से भिन्न बनाता है।

## शिक्षा और संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र निर्माण

अरविंद ने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का मूल आधार माना। उन्होंने औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए 'राष्ट्रीय शिक्षा' का समर्थन किया, जिसमें भारतीय संस्कृति, दर्शन, भाषा और मूल्यों का समावेश हो। उनका मानना था कि राष्ट्र की आत्मा को जगाने के लिए ऐसे नागरिक चाहिए जो शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण हों। उनके 'इंटीग्रल एजुकेशन' (समग्र शिक्षा) के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

## राष्ट्रवाद का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

अरविंद घोष का राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं था। वे राष्ट्रवाद को मानवता की समग्र चेतना के विकास की एक अवस्था मानते थे। उन्होंने 'The Ideal of Human Unity' में विश्व एकता की परिकल्पना की, जो राजनीतिक राष्ट्रवाद के पार जाकर एक वैश्विक आध्यात्मिक एकता की बात करती है। उनका राष्ट्रवाद अंततः *वसुधैव कुटुम्बकम्* की भावना में विकसित होता है।

## क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से आध्यात्मिक उत्थान तक

अपने प्रारंभिक वर्षों में अरविंद घोष ने सक्रिय राजनीतिक भूमिका निभाई—*अनुशीलन समिति*, *युगांतर*, *वंदे मातरम्* जैसे संगठनों और पत्रिकाओं के माध्यम से उन्होंने युवाओं में क्रांति की भावना भरी। लेकिन अलीपुर बम केस और जेल में प्राप्त आध्यात्मिक अनुभूतियों के बाद उन्होंने एक उच्चतर मार्ग अपनाया। यह परिवर्तन व्यक्तिगत अवकाश नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद की एक गहराई में यात्रा थी, जहाँ संघर्ष की भूमि से साधना की भूमि तक एकत्मता बनी रही।[9]

## भारतीय विमर्श में उनका स्थान

भारतीय राष्ट्रवादी विमर्श में अरविंद घोष एक सेतु का कार्य करते हैं—एक ओर आधुनिक राजनीतिक चेतना और दूसरी ओर प्राचीन आध्यात्मिक विरासत। उन्होंने बताया कि राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है। उनके विचार आज के संदर्भ में भी मार्गदर्शक हैं, जब राष्ट्रवाद की परिभाषा को पुनः मूल्यांकन की आवश्यकता है।

दरअसल, अरविंद घोष का राष्ट्रवाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक विमर्श में एक ऐसी धारा है, जो राजनीति से आगे जाकर भारत के आत्मा की खोज करता है। उनका योगदान विचारधारात्मक गहराई और आध्यात्मिक ऊँचाई के कारण भारतीय राष्ट्रवाद को सार्वकालिक आयाम प्रदान करता है।

## समकालीन भारत में महर्षि अरविंद के विचारों की प्रासंगिकता

महर्षि अरविंद का जीवन और चिंतन भारत की राजनैतिक स्वतंत्रता से कहीं अधिक गहरा और व्यापक था। वे केवल एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं, बल्कि एक ऋषि, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। उनके विचारों का मूल उद्देश्य भारत को एक *'दिव्य जीवन'* की ओर अग्रसर करना था—ऐसा जीवन जो भौतिक उन्नति के साथ-साथ आत्मिक उन्नयन को भी अपनाए। 21वीं सदी के भारत में, जब समाज तकनीकी विकास, आर्थिक वृद्धि और वैश्वीकरण की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है, महर्षि अरविंद के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

### 1. आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण

महर्षि अरविंद ने भारत की स्वतंत्रता को केवल राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में नहीं देखा, बल्कि उसे आत्मा के विकास से जोड़ा। आज जब भारत ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, तब उनकी "आध्यात्मिक राष्ट्रवाद" की अवधारणा हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि क्या हमने एक *आत्मनिर्भर और नैतिक राष्ट्र* के रूप में आत्मा की स्वतंत्रता भी प्राप्त की है? आज जब नैतिक पतन, सामाजिक विघटन और सांप्रदायिक तनाव बढ़ते जा रहे हैं, अरविंद की यह धारणा कि "राष्ट्र एक जीवंत आत्मा है" और उसका उत्थान तभी संभव है जब व्यक्ति का नैतिक और आत्मिक उत्थान हो—हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायी है।

### 2. शिक्षा का पुनर्गठन – समग्र विकास की ओर

महर्षि अरविंद का शैक्षिक दर्शन 'समग्र शिक्षा' (Integral Education) पर आधारित था, जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक विकास का समन्वय करता है। आज की शिक्षा प्रणाली, जो अधिकतर रटंत विद्या और परीक्षा-केन्द्रित हो चुकी है, उसमें अरविंद की शिक्षा-नीति क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में अरविंद के विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है—बहु-विषयक शिक्षा, नैतिकता पर बल, मातृभाषा में शिक्षा, और शिक्षार्थी केंद्रित पद्धतियाँ—ये सभी उनके दृष्टिकोण से मेल खाती हैं।

### 3. नेतृत्व का नैतिक और आध्यात्मिक आयाम

आज के राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व में जहाँ व्यावसायिकता और अवसरवादिता हावी होती जा रही है, वहाँ अरविंद का विचार कि नेतृत्व का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि समाज का आध्यात्मिक उत्थान होना चाहिए—एक मार्गदर्शन बनकर उभरता है। उन्होंने कहा था, "*राजनीति तब तक अधूरी है जब तक वह आत्मिक ध्येय से प्रेरित न हो।*" समकालीन भारत में यह विचार एक स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### 4. भारत का वैश्विक मिशन – वसुधैव कुटुम्बकम् की पुनर्पुष्टि

महर्षि अरविंद ने भारत को "विश्वगुरु" के रूप में देखा था—एक ऐसा राष्ट्र जो आध्यात्मिक ज्ञान और मानवता के कल्याण का मार्ग दिखा सके। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब दुनिया आत्मिक संकट, मानसिक तनाव, युद्ध और नैतिकता के ह्रास से जूझ रही है, भारत की भूमिका केवल एक आर्थिक शक्ति बनने की नहीं, बल्कि विश्व को शांति, सह-अस्तित्व और चेतना की ऊँचाइयों तक ले जाने की हो सकती है।[10] यह दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका को एक नैतिक आयाम दे सकता है।

### 5. आंतरिक क्रांति और सामाजिक समरसता

अरविंद का यह विश्वास कि सच्चा परिवर्तन व्यक्ति के भीतर से शुरू होता है, समकालीन सामाजिक आंदोलनों के लिए मूलमंत्र है। आज जब असमानता, जातिवाद, भेदभाव और हिंसा जैसी चुनौतियाँ सामने हैं, तब उनके द्वारा प्रतिपादित *अंतरात्मा की क्रांति*—'Inner Revolution'—वास्तविक और स्थायी सामाजिक परिवर्तन की कुंजी है।

## निष्कर्ष:

अरविंद घोष का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान बहुआयामी, गहन और दूरदर्शी रहा है। वे न केवल एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे, बल्कि एक दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री और आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे। जहाँ अधिकांश राष्ट्रवादी नेताओं की भूमिका राजनीतिक क्रियाकलापों तक सीमित थी, वहीं अरविंद घोष ने राष्ट्रवाद को एक व्यापक सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में देखा। उन्होंने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी संघर्ष का नेतृत्व किया, बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण हेतु एक वैचारिक और आध्यात्मिक आधार भी प्रदान किया। उनकी आरंभिक राजनीतिक सक्रियता, विशेषकर 1905 के बंग-भंग विरोध आंदोलन में उनकी अग्रणी भूमिका, *बंदे मातरम्* और *युगांतर* जैसे पत्रों के माध्यम से युवाओं में क्रांति की भावना का संचार, तथा अनुशीलन समिति के माध्यम से सशस्त्र संघर्ष की योजना, उन्हें भारत के पहले संगठित क्रांतिकारियों में स्थान दिलाती है। उनका यह पक्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उग्र राष्ट्रवाद की नींव रखता है, जो आगे चलकर भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं को प्रभावित करता है। हालाँकि, अलीपुर बम कांड में गिरफ्तारी और जेल में आध्यात्मिक अनुभवों के बाद उनका झुकाव राजनीति से आध्यात्मिक साधना की ओर हुआ, लेकिन इससे उनका राष्ट्रवाद कमजोर नहीं हुआ—बल्कि उसने एक गहराई और आध्यात्मिक आयाम प्राप्त किया। पांडिचेरी प्रवास के दौरान उन्होंने *आर्य* पत्रिका, *The Life Divine*, *The Ideal of Human Unity*, तथा *Essays on the Gita* जैसे ग्रंथों के माध्यम से एक ऐसे भारत की परिकल्पना की जो न केवल भौतिक रूप से स्वतंत्र हो, बल्कि आत्मिक रूप से जाग्रत भी हो। अरविंद घोष का योगदान इस दृष्टि से अद्वितीय है कि उन्होंने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक या आर्थिक आंदोलन नहीं माना, बल्कि उसे मानवता के आध्यात्मिक विकास का माध्यम समझा। उनका विचार था कि भारत की स्वतंत्रता विश्व कल्याण का एक अनिवार्य अंग है। उनके विचार और जीवन-दर्शन आज भी प्रेरणा स्रोत हैं—विशेषकर जब आधुनिक भारत आत्म-पहचान, नैतिकता, शिक्षा और नेतृत्व के नए स्वरूपों की खोज में है।

इस प्रकार, अरविंद घोष का योगदान स्वतंत्रता संग्राम की रणनीतिक धरातल से लेकर वैचारिक और आध्यात्मिक परतों तक फैला हुआ है। वे एक ऐसे राष्ट्रनिर्माता थे, जिन्होंने भारत को केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि एक चेतना के रूप में देखा।

## संदर्भ सूची :

01. Aurobindo, S. (2001). *The Life Divine* (Vol. 1 & 2). Sri Aurobindo Ashram Trust. pp. 112
02. अयंगार, के.आर. श्रीनिवास (1950)। *श्री अरविंद: एक जीवनी और इतिहास*। पांडिचेरी: श्री अरविंद इंटरनेशनल एजुकेशन सेंटर। पृष्ठ 201
03. वही
04. Nanda, B. R. (2011). *Gandhi and His Critics*. Oxford University Press. pp. 74 (for comparative ideological context)
05. Bhattacharya, S. (2005). *Rethinking Indian Political Institutions: Sri Aurobindo and the Nationalist Discourse*. Indian Historical Review, 32(2), 189
06. वही
07. शर्मा, रामनाथ (2010)। "श्री अरविंद का राजनीतिक चिंतन और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद"। *भारतीय राजनीति विज्ञान समीक्षा*, 71(3), पृष्ठ 615
08. वही
09. Chattopadhyaya, K. D. (1980). *Sri Aurobindo: A Philosophical Review*. Indian Publications. pp. 95
10. Sharma, R. N. (2010). *Sri Aurobindo's Political Thought and Spiritual Nationalism*. Indian Journal of Political Science, 71(3), 615